REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

कबीर का सामाजिक संदेश

प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे
सा. प्राध्यापक , कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
शंकरनगर ता. बिलोली जि. नांदेड.

प्रास्ताविक :

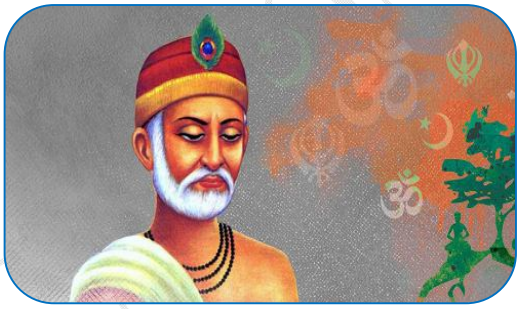

हिंदी साहित्य की परम्परा में अनेक संत एवं समाजसुधारक हुए है। हिंदी साहित्य भी भिन्न–भिन्न विशेषताओं को लेकर चलता है। काल विभाजन का नामकरण भी विशिष्ट प्रवृतियों के आधार पर किया गया है। जैसे आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक काव्य की कुछ विशेष बिंदु रहे है। जैसे भक्तिकाल में भक्ति विशेष रही है। संत साहित्य में निर्गुण काव्यधारा और सगुन काव्यधारा दो वर्गो में भक्ति काव्य का विस्तार होता रहा है। निर्गुण काव्यधारा के संत कवि के रुप में कबीरदास प्रमुख रहै है। उनका काव्य भक्ति के साथ ही साथ सामाजिक एकता का संदेश देता है।

♦ कबीरदास परिचय

किसी भी व्यक्ति का जीवन परिस्थितियों से प्रभावित होता है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है। कबीरदास के समय में समाज की स्थिति अराजकतासे फैली हुई थी। महापुरुषों का जीवन कठिन स्थितियों से गुजरता है। अतः कबीरदास के जन्मतिथि के बारे में विदवानों में मतभेद पाए जाते है। अधिकांश विदवान कबीर का जन्म संवत 1455 सन 1398 में काशी या मगहर में हुआ, ऐसी मान्यता दी गई है। उनके जन्म के बाद की कथा प्रचलित है। जुलाहा दंपती ने कबीर को लहरतारा सरोवर से गोद में लिया। उनका नाम नीरु और नीमा था। नीरु और नीमा भी विसंतान थे। कबीर को गोद में लेते ही उनका वात्सल्य भाव जाग उठा। जुलाहा परिवार कपडा बुनने का काम करते थे। आगे चलकर कबीरदास ने भी उनके व्यवसाय में हाथ बाँटा। कबीरदास जी ने काशी के विदवान रामानंद जी को गुरु के रुप में चुना। कबीर घुमकडी स्वभाव के व्यक्ति थे। इसी कारन मगरुर, मानिकपुर,झुँसी, मडौल पंडरपूर, जगन्नाथपुरी आदि स्थानों का संकेत प्राप्त होता है। कबीर की मृत्यू एवं स्थान के बारे में भी मतभेद पाए जाते है। जैसे–उनका वात्सल्य भाव जाग उठा। जुलाहा परिवार कपडा बुनने का काम करते थे। आगे चलकर कबीरदास ने भी उनके व्यवसाय में हाथ बाँटा। कबीरदास जी ने काशी के विदवान रामानंद जी को गुरु के रुप में चुना। कबीर घुमकडी स्वभाव के व्यक्ति थे। इसी कारन मगरुर, मानिकपुर,झुँसी, मडौल पंडरपूर, जगन्नाथपुरी आदि स्थानों का संकेत प्राप्त होता है। कबीर की मृत्यू एवं स्थान के बारे में भी मतभेद पाए जाते है।

जैसे– "संवत पन्द्रह सौ औ पांच मगहर कियौ गमन। अगहन सुदी एकादसी मिले पवन में पवन।"3

अतः कबीरदास जी की मृत्यु संवत् 1575 में मगहर में हुई। कुछ विदवान कबीरदास को अविवाहित मानते है तो परम्परा के अनुसार कबीर की पत्नी कानाय लोई थी, स्वीकार किया जाता है। उनकी ग्रहस्थी को दर्शानेवाली निम्न पंक्तियाँ आती है–"मेरी बहरिया कौ धनिया नाड। ले राखियो रमजनीया नाड। कहत कबीर सुनहुरे लोई। अब तुमरी परतीतिन होई।"

कबीर को एक पुत्र और एक पुत्री भी थी, ऐसा कहा गया हे। जैसे "बूडा बंसु कबीर का,उपजियो पूत कमाल। हरि का सुमिरन छाँकि के, भरि लै आया माल।" संदर्भ कबीरदास पृष्ठ–12

कहा जाए तो कबीर विवाहित थे और उन्हे दो संताने थे। एक पुत्र कमाल था और पुत्री कमाली थी। इस प्रकार कबीरदास जी ने समाज में रहकर सामाजिक जीवन बिताया है। उनके काव्य पदों में जों सामाजिक विसंगतियों वर्णन हुआ है, वह समाज में रहकर किया जा सकता है। कबीरदास जी के समय सामाजिक, राजनितिक एवं धार्मिक अराजक था। चारों ओर सामाजिक मूल्यों का पतन हुआ था। कबीर विचारों से एक स्पष्ट वक्ता थे। जो जिसमें बुराई होती थी, उसका वें विरोध करते है। धर्म,जाति के नाम पर किए जा रहे दिखावे कबीरदास विरोध करते है। यही कारण है कि, आज भी कबीरदास का काव्य समाज के लिए उपदेशपरक है। आज की संक्षिप्त एवं कलुषित मानसिकताओं में जिनेवाले मनुष्य को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

♦ कबीर के सामाजिक विचार :

कबीरदास ने कई दोहे एवं पदों की रचनाएँ की है। उनकी रचनाओं में बीजक, आदि ग्रन्थ, कबीर शब्दावली, कबीर वचनावली, साखी ग्रन्थ, कबीर ग्रन्थावली आदि महत्वपूर्ण है । यह अलग–अलग विद्वानों दवारा संग्रहित की गई है। सबसे लोकप्रिय 'कबीर ग्रंथावली' के रुप में डॉ.शाम सुन्दर दास द्वारा 1985 में लिखी प्रसिदध है। कबीरदास जी के दोहों में वैविध्य है। जैसे गुरु, सदगुरु गुरु,शिष्य, साधु, भेष, संगति, सेवक, भक्ति, उपदेश, क्रोध, परमार्थ आदि विविध विषयों का अन्तर्भाव दोहों में हुआ है। सामाजिक विकृत रुढियों एवं परम्पराओं कबीरदास विरोध करते है। अडंबर एवं दिखावे की प्रदर्शनकारी वृति पर करारा व्यंग्य किया गया है। अतः कबीरदास जी के काव्य में सामाजिक विकास के विचारों का प्रतिपादन हुआ है। वह निम्न लिखित है।

कबीर घुमन्तू जीवन व्यतित करनेवाले कवि थे। उन्होंने कई तीर्थो को मागाएँ की थी। उन्होंने दिखावे के स्थान पर मन की शुदिध और सत्संग का समर्थन किया है। जैसे– "मथुरा काशी व्दारिका,हरिव्दार जगनाथ,साधु संगति हरिभजन बिन,कछु न आवैहाथ।"4

भारतीय संस्कृति में तिर्थस्थानों का विशेष महत्व है। कबीरदास भी तीर्थ स्थानों का महत्व स्वीकार करते है। परंतु कबीर की मान्यता है कि, ज्ञानी के संगत में जो ाान की प्राप्ती होती है वह तीथस्थानों पर नही होती। कबीर अपने जीवन में किसी विद्वान मनुष्य की संगत करने का उपदेश देते है। इतना ही नही गुरु हमारे जीवन में महत्वपूर्ण होते है। गुरु का चुनाव करते समय भी हमे सतर्क रहना चाहिए। हम जिस किसी पर भी जब विश्वास करते है, उसके पास ज्ञान और विवेक होना आवश्यक है। कबीर अपने गुरु की स्तुति इसलिए करते है कि, उनके ही कारण जीवन को दिशा मिलती है। गुरु योग्य और विदवान है तो शिष्य का भी बेडा पार हो जाता है, नही तो शिष्य को अनेक परिणाम भुगतने पडते है। जैसे

जा का गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंघ । अंधे अंधा ठेलिया, दुन्यू कूप पडत।"5

अर्थात गुरु ज्ञान प्रदातान हो तो गुरु के साथ ही साथ शिष्य की भी नैया अंधकार के खाई में डूब जाती है। सेवक अपनी सेवा का कर्तव्यविमुख होना चाहिए। कबीरदास जी कहते है कि, जो गुरु के सच्चे सेवक है, उन्हे गुरु के ही आदेश पालन करना चाहिए। ऐसे शिष्य गुरु के प्रिय होते है। ज्ञान प्राप्ती करने के लिए शिष्य को नम्रता के साथ ही साथ सेवा भाव महत्वपूर्ण है। कबीर कहते है कि,

"गुरुमुख गुरु आज्ञ चलै, छाँडि देइ सब काम। कहैं कबीर गुरुदेव को, तुरत करै परणाम।"6

सच्च सेवक की यही भूमिका रहती है कि, वह गुरु के आज्ञा पर अपने प्राण भी देने के लिए तुरन्त तैयार रहै। संतोष भाव से युक्त और सभी का हित चाहनेवाले और शुदध भाव रुपी सेवक ही सच्चे सद्गुरु के सेवक होते है। अतः सेवाभाव ही उनमें हरपल विद्यमान रहता है। गुरु की आज्ञा भंग करनेवाले की बदतर स्थिति होती है। ऐसे शिष्य

अंधकार की काल परिक्रमा में गुम हो जाते है। काल के अंधकार के भय से निकालनेवाले गुरु ही सद्‌गुरु होते है। अपने जीवन का सर्वस्व गुरु के चरणों में जो समर्पित करता है उसे सबकुछ ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे –

"सबकुछ गुरु के पास है, पाइये अपने भाग ।
सेवन मन सौंप्या रहे, रहै चरण में लाग ।"7

जीवन का बेडा पार करना चाहिए। समाज मे भिन्न–भिन्न प्रकार के मनुष्य होते है। सब सशक्त एवं शक्तिशाली मनुष्य दुर्बलों पर अन्याय करते है। समाज के विकास के लिए शक्तिशाली मनुष्यों का योगदान भी आवश्यक है। अहंकार दुर्गूण के कारण समाज की हानि होती है। इसलिए ऐसे अहंकारी एवं मदांध मनुष्यों को कबीरदास उपदेश करते है । जैसे– "दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाथ । भुई खाल की साँस सों, सार भसम है जाय।"

सामाजिक समता को स्थापित करने के लिए यह प्रयास सराहनीय है। मनुष्य का यह शरीर कुछ ही दिनों का होता है। यह मनुष्य रुपी जो परिवेश मिला है। वह एक दिन खाक ही होनेवाला है। इसलिए अन्तिम साँस तक निर्धन और असलाय लोगों सेवा करने में ही भलाई है। राज्य, सिंहासन और धन–दौलत मरने के बाद कुछ काम नही आता। जैस–

"राजपाट धन पायके, क्यो करता अभिमान।
पाडोसी की जो दशा, भई सो अपनी जान।"8

मनुष्य के पास थोडी–बहुत धन–दौलत जो आयी क्या कि, वह अहंकार में मदमस्त हो जाता है। इसलिए कबीरदासजी ने अपने पडोसी की जो दुर्दशा (मृत्यू) हुई है, उससे सबक लेने का संदेश देते है। जहाँ ज्ञान का अभाव है वहाँ पर धन का भी अभाव होता है। धन के अभाव में तन का स्वास्थ भी वंचित रहता है। इसलिए मनुष्य को अपने जीवन में पुरुषार्थ की प्राप्ती करते हुए गुरु के चरणों में भाव समर्पित करने चाहिए।

कबीरदास जी के काव्य में लोककल्याण की भावना है। लोगों का हित ही कबीर का उद्देश है। यही कारण है कि, कबीरदास अच्छे की स्तुति करते है और बुरे विरोध। उनके दोहे में गुरु का नामस्मरन करने का वे संदेश देते है। तथा भूखे को रोटी खिलाने और उनके दोहे में गुरु का नामस्मरन करने का वे संदेश देते है। तथा भूखे को रोटी खिलाने और दूर्बल की सेवा करने का उपदेश करते है। जैसे–

"लेने को गुरु नाम है, देने को अन दान ।
तरने को आधीनता, बुडन को अभिमान।"

मनुष्य का दुश्मन कोई दूसरा नही है, वह तो स्वयं ही स्वयं का दुश्मन है। जैसे चिता और चिंता दो शब्द भिन्न अर्थोवाले है, उसी प्रकार तरना और बुडना यह दो शब्द विभिन्न अर्थी है। नामस्मरण करना, और अन्न दान करना इस भवसागर रुपी संसार मे तरने के लिए साधन है। मनुष्य को डुबाने के लिए अर्थात जीवन का दुःखद अंत होने के लिए अभिमान सहाय्यक है। इसीलिए मनुष्य के हमेशा सेवाभाव करते हुए अपने मनुष्य के आचरण पर भी मनुष्य तथा समाज का विकास निर्भर करता है। इस संसार रुपी भवसागर में सभी चल–अचल हमसफर है। सभी को अपने–अपने मंजिल पर जाना है। इसी जोभी, जिसके साथ भी विचारों का विनिमय होगा, तब उदारता एवं नम्रता होनी चाहिए। हर एक के सहयोग आना चाहिए। जैसे–

"माटी कहे कुम्हार सो, क्या तू रौंदे मोहि।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौंदूगी तोहि।"9

उपर्युक्त पद में कबीरदास ने माटी और कुम्हार का उदाहरण प्रस्तुत किया है। मनुष्य को भी एक दिन इस मिट्टी में ही मिलना है। सभी का एक समय होता है। मनुष्य के जीवन में सुा हो या दुःख हर किसी को

विनम्रता के साथ उदारतापूर्वक आदान–प्रदान करना चाहिए। जिससे सामाजिक विकास हो। हर समय शुभ ही होता है। जो भी काम कल करना है, वह आज ही करने में भलाई है। किसी काम को प्रारंभ करने के पूर्व किसी शुभ मूहूर्त का इंतजार नही करना चाहिए। इसलिए आज का कल और कल का परसो टालनेवाला कार्ये किस प्रकार करना चाहिए। जैसे–

"कल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब।"10

काम को टालने वाले और उदासी लोगों को अपने कर्तव्य से परिचित किया गया है। समाज की उन्नति के लिए परिश्रमों की आवश्यकता है। समाज का विकास तथी होगा जब समय–समय पर ही कार्ये होगा। नैतिक विचारोंपर आधारित ही समाज रचना होनी चाहिए। कबीरदास अपने घुमन्तू जीवन में कई स्थानों का निरीक्षन भी करते है। यही कारण कि, उनके दोहों में समाज में फैली सामाजिक विषमता का जिक्र हुआ है। समाज व्यक्तियों के समूह से मिलकर बनता है। व्यक्ति के विकास पर ही समाज की उन्नति निर्भर होती है। इसलिए कुसंस्कारी और दिखावे की प्रदर्शनकारी प्रवृति का उन्होंने विरोध किया है। साधु, पाखंडी, ढोंगी, मूर्ख, हिंदू–मुसलमान आदि सभी वर्गो पर उन्होंने लेखनी चलाई है। संकिर्ण एवं कट्टा मानसिकता की विचारधारा को कबीरदासने मूँहतोड जवाब दिया है। दिन –ब दिन जाति की श्रेष्ठता बढती जा रही है। जाति–धर्म को गुटों में मनुष्य बाँटता जा रहा है। कबीरदास समाज में दो ही मनुष्यों का उल्लेख करते है। कबीरदास की दृष्टि से जाँति पाँति का विचार रखना शुद्ध बुध्दि हिनता है। इसलिए कबीरदास कहते है कि,

"जाति न पूछो साधू को, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पडी रहन दो म्यान।"11

जाति–जाति के नाम पर किए जा रहे भेदभाव का कबीरदास विरोध करते है। साधू अर्थात ज्ञानियों कोई जाति नही होती केवल ज्ञान ही उनकी पहचान होती है। इतना ही नही कबीरदास हिन्दु और मुसलमानों की दिखावे की भक्ति पर भी कठोर प्रहार करते है। जैसे–

"मोको कहाँ ढूँढे बंदे मै तो तेरे पास में
ना मै देवल ना मै मस्जिद। ना काबा कैलास में।

इश्वर और अल्ला अंतरात्मा की आवाज सूनते है। मंदिर और मस्जिदों में इश्वर का दर्शन नही होता। पवित्र विचार और शुद्ध भाव से ही इश्वर और अल्ला की प्राप्ति होगी। इस लिए भगवान की कृपा पाने के लिए पवित्र विचारों की भी आवश्यकता है। कबीरदास हिन्दू और मुसलमानों की करनी और कथनी में किस प्रकार का अंतर, इसका प्रतिपादन करते है जैसे–

"तुरक मसीत देहर हिन्दू, आप आप को घाय।
अलख पुरुष घट भीत रै, ताका पार न पाय।"12

कबीर को दिखावे की वृति मान्य नही थी। ऐसा कही पर भी उन्हें दिखाई देता है तों, वे उसका विरोध करते है। मनुष्य में विषय रुपी विकार बहुत है। इन विकारों को पास रखकर ही हिंदू–मुस्लीम उपासना करते है तो परमात्मा रुपी इश्वर की कृपा नही होती। विषय रहित विकार जब तक विटते नही तब तक यह संभव नही है। इसलिए अपने ही स्वयं में झाँककर विकारों को मिटाना होगा। समाज में जब तक जातिभेद, छुआछूत ,उँच–नीच की भावना हे तब तक सामाजिक एकता असंभव है। कबीरने समाज के हर एक वर्ग को अनिष्ट एवं बुरी रुढियों एवं प्रभाओं को त्यागने का संदेश दिया है। धर्म का रुप ऐसा होना चाहिए जिसमें कर्मकाडों का अभाव हो। जो बंधुत्व एवं समता का प्रतिपादय विषय हो। कबीर हिंसा का खूलकर विरोध करते है अपनी प्रगति

के लिए दूसरे जीवनों की हत्या करना वे अपराध मानते है। संसार के सभी जीवों को एकसूत्र में कबीरदास–बाँधना चाहते थे। इसलिए कबीर जीवन में अहिंसा को महत्व देते है। जैसे–

"काजी काज करो तुम कैसा । घर घर जबै करावो वैसा।
बकरी मुरगी किन फुरमाया। किसके हुकूम तुम छुरी चलाया।"13

मनुष्य अपने अर्थात स्वयं के जीवन का ध्यान रखता है, उसी प्रकार दूसरों के जीवों के प्रति सचेत रहने का संदेश कबीर देते है। इतना ही नही स्वयं को काँटा चुभने पर पीडा का अनुभूति होती है, वैसी ही दूसरे पशुओं पर छूरी चलाने से पीडा होती है। अर्थात यहाँ पर कबीर भेड–बकरीयों की हत्या करनेवाले जीवों के प्रति क्या दिखाते है। मद या अहंकार के कारण दूसरे जीवों की हत्या करनेवाले मनुष्य के सचेत करने का प्रयास किया है। समाज में कई प्रकार अनैतिक कार्ये किए जाते है। उसका भी कबीर विरोधउ करते है। जैसे जुआ खेलना, चोरी करना, झूठी प्रशंसा करना, व्याज लेना, रिश्वत लेना ऐसा करना व्यक्ति एवं समाज के पतन के लिए कारणीभूत होते है। अतः मनुष्यों को उपर्युक्त कार्यो से हमेशा बच के रहने का संदेश देते है–

"जुआ चोरी मुखबिरी व्याज घूस पर नार।
जो चाहै दीदार को एती बस्तु निबार।"14

कई लोग मादक द्रव्यों का सेवन करते है। कबीर के समय में भी कई योगी और साधक भी मदिरा और भाँग का सेवन करते थे। इससे सामाजिक स्वास्थ्य के स्तर पर कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। अतः सामाजिक स्वास्थ्य स्वस्थ रहे और समाज का कबीर को दिखावे की वृति मान्य नही थी। ऐसा कही पर भी उन्हें दिखाई देता है तों, वे उसका विरोध करते है। मनुष्य में विषय रुपी विकार बहुत है। इन विकारों को पास रखकर ही हिंदू–मुस्लीम उपासना करते है तो परमात्मा रुपी इश्वर की कृपा नही होती। विषय रहित विकार जब तक विटते नही तब तक यह संभव नही है। इसलिए अपने ही स्वयं में झाँककर विकारों को मिटाना होगा। समाज में जब तक जातिभेद, छुआछूत ,उँच–नीच की भावना हे तब तक सामाजिक एकता असंभव है। कबीरने समाज के हर एक वर्ग को अनिष्ट एवं बुरी रुढियों एवं प्रभाओं को त्यागने का संदेश दिया है। धर्म का रुप ऐसा होना चाहिए जिसमें कर्मकाडों का अभाव हो। जो बंधुत्व एवं समता का प्रतिपादय विषय हो। कबीर हिंसा का खूलकर विरोध करते है अपनी प्रगति के लिए दूसरे जीवनों की हत्या करना वे अपराध मानते है। संसार के सभी जीवों को एकसूत्र में कबीरदास–बाँधना चाहते थे। इसलिए कबीर जीवन में अहिंसा को महत्व देते है। जैसे–

"काजी काज करो तुम कैसा । घर घर जबै करावो वैसा।
बकरी मुरगी किन फुरमाया। किसके हुकूम तुम छुरी चलाया।"13

मनुष्य अपने अर्थात स्वयं के जीवन का ध्यान रखता है, उसी प्रकार दूसरों के जीवों के प्रति सचेत रहने का संदेश कबीर देते है। इतना ही नही स्वयं को काँटा चुभने पर पीडा का अनुभूति होती है, वैसी ही दूसरे पशुओं पर छूरी चलाने से पीडा होती है। अर्थात यहाँ पर कबीर भेड–बकरीयों की हत्या करनेवाले जीवों के प्रति क्या दिखाते है। मद या अहंकार के कारण दूसरे जीवों की हत्या करनेवाले मनुष्य के सचेत करने का प्रयास किया है। समाज में कई प्रकार अनैतिक कार्ये किए जाते है। उसका भी कबीर विरोधउ करते है। जैसे जुआ खेलना, चोरी करना, झूठी प्रशंसा करना, व्याज लेना, रिश्वत लेना ऐसा करना व्यक्ति एवं समाज के पतन के लिए कारणीभूत होते है। अतः मनुष्यों को उपर्युक्त कार्यो से हमेशा बच के रहने का संदेश देते है–

"जुआ चोरी मुखबिरी व्याज घूस पर नार।
जो चाहै दीदार को एती बस्तु निबार।"14

कई लोग मादक द्रव्यों का सेवन करते है। कबीर के समय में भी कई योगी और साधक भी मदिरा और भाँग का सेवन करते थे। इससे सामाजिक स्वास्थ्य के स्तर पर कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। अतः

सामाजिक स्वास्थ्य स्वस्थ रहे और समाज का विकास हो। इसी लिए कबीर ऐसे कार्ये से दूर रहने का संदेश देते है। समाज आदर्शों के मूल्यों की नींद पर ही निर्भर रहता है। जिससे वैयक्तिक गुणों का विकास होता है। जिस समाज में एकता का भाव नही है, विचारों का आदान–प्रदान नही है। धमीचार्यो के आदर्शो के अनुकरण पर ही समाज का विकास होगा। अतः सामाजिक विकास के लिए समता, बंधुत्व, न्याय की स्थापना आवश्यक है।

समारोप :–

मध्यकाल में कई संत हुए है। उनमें कबीरदास जी का साहित्य एवं कार्ये समाज के लिए निल का पत्थर सिद्ध हुआ है। आज समता, बंधुत्व एवं न्याय की जो इमारत खडी है, वह केवल कबीरदास जैसे संतों के विचारों के नींव पर ही निर्भर है। कबीरदास के विचार समाज सुधार के लिए आवश्यक है। कबीरदास ने जो मनुष्य को जातिगत, कुलगत और सम्प्रदायगत से उँचा उठाया है, जिससे व्यापक मानवता की स्थापना होगी। एकता और शान्ति से ही सामाजिक विकास संभव है। घोर अंधकार के युग में भी कबीरदास ने मनुष्य, समाज एवं शब्द को वैचारिकता प्रदान की है। जिस पर चलकर भारतीय समाज पुरे विश्व में शांति और विकास की स्थापना कर सकता है। अतः सामाजिक कार्ये के योगदान के लिए कबीरदास भारतीय साहित्य में विराजीत रहेंगे।

संदर्भ सूचि :–

1) कबीर कवि और युग एक पूनर्मूल्यांकन–डॉ.के.वी लता पृष्ठ 20
2) कबीर दोहावली –महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 54
3) कबीर ग्रथावली – डॉ.शामसुंदरदास पृष्ठ 2/15
4) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 55/4
5) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 56/7
6) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 67/11
7) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 213
8) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 80/8
9) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 84/25
10) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 86/35
11) कबीर साहित्य में नीति तत्व– श्रीमती उर्मिला मिश्र पृष्ठ 66
12) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 21
13) कबीर वचनावली– अयोध्या सिंह उपाध्याय पद 171 पृष्ठ 168
14) कबीर वचनावली – अयोध्या सिंह उपाध्याय पद 712 पृष्ठ 71

LBP PUBLICATION